दिल्ली, नोएडा, साहिबाबाद, मुरादनगर, मोदीनगर, लोनी, मेरठ, हापुड़ से एक साथ प्रसारित

विशेष खबर

हर खबर की रखे खबर

विशेष खबर visheshkhabar

• वर्ष: • 2 अंक: 11
पृष्ठ : 8
गाजियाबाद
01 से 15 अक्टूबर-2019
मूल्य: 10 रुपये
पाक्षिक समाचार पत्र

visheshkhabarvk@gmail.com
RNI: UPHIN/2017/74151

पेज-02 मनोज तिवारी बाहरी हैं तो खुद क्या है केजरीवाल?

अन्दर के पेजों पर
3 सियासी पिच के खिलाड़ियों ने रामलीला में भी जमाया रंग
4 मां के नौ रूपों की पूजा कर भगवान श्रीराम ने किया 'रावण' का अंत
5 एक्वा लाइन पर लगी प्लास्टिक डिस्पोजेबल मशीन
8 'बिग बॉस' को लेकर ब्राह्मणों में उबाल

दिल्ली में विधानसभा चुनाव की हलचल

विशेष संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली में राजनैतिक पार्टियों ने विधानसभा चुनाव की तैयारियां शुरू कर दी है। संभावना है कि विधानसभा चुनाव दिसंबर में होंगे। हालांकि पहले से ही चुनाव के एजेंड़े पर लगी आप आदमी पार्टी ने एक के बाद एक रियायती और मुफ्त की घोषणाओं से अपनी जमीन तैयार कर ली है। वहीं भाजपा भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सहारे दिल्ली के चुनावी समर में उतरने की तैयारी में है।

'आप' पार्टी की मानें तो भारतीय जनता पार्टी इसी साल के अंत में दिल्ली में चुनाव करवा सकती है। यह चुनाव झारखंड के साथ हो सकते हैं। झारखंड में नई सरकार का गठन 5 जनवरी से पहले होना है और दिल्ली में नई सरकार 22 फरवरी से पहले बननी है। रिप्रेजेंटेशन ऑफ पीपल ऐक्ट, 1951 के सेक्शन 15 के हिसाब से विधानसभा भंग होने की तारीख से छह महीने तक चुनाव करवाए जा सकते हैं। इस नियम का इस्तेमाल दो राज्यों के चुनावों को एकसाथ करवाने के लिए ही किया जाता है। आप नेताओं को लगता है कि

▸▸ झारखंड के साथ हो सकते है दिल्ली में चुनाव

दोनों राज्यों में चुनाव की घोषणा अक्टूबर-नवंबर में हो सकती है, जिससे अन्य पार्टियों को तैयारी का ज्यादा वक्त न मिले। आप सूत्रों का कहना है कि हरियाणा और महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के नतीजों की घोषणा 24 अक्टूबर को होनी है। अगर बीजेपी जीतती है तो वह जल्द दिल्ली और झारखंड में भी चुनाव करवाना चाहेगी ताकि जीत का फायदा इन चुनावों में भी उठा सके।

आम आदमी पार्टी के नेता संजय सिंह ने बताया कि आप पार्टी ने पहले से ही तैयारियां शुरू कर दी हैं। पार्टी ने पहले ही कैंपेन लॉन्च कर दिया है।

▸▸ रियायती और मुफ्त की घोषणाओं के दम पर 'आप'

यह कार्यक्रम सभी 70 विधानसभा सीटों पर चलाया जा रहा है। उ?का मानना है कि पिछली बार की तरह इस बार 67 सीटों पर जीत मिलेगी।

वहीं दूसरी ओर भाजपा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सहारे दिल्ली में चुनावी जमीन तलाश

▸▸ पीएम मोदी के सहारे जमीन तलाशने की तैयारी

रही है। प्रधानमंत्री के मेगा शो कराकर भाजपा दिल्ली में कार्यकताओं में उत्साह भरने की रणनीति तैयार कर रही है। दिल्ली भाजपा स्थानीय मुद्दे पर कम और केंद्र के विकास कार्यों को लेकर चुनावी रण में उतरेगी। इसी कड़ी में अनुच्छेद-370 खत्म होने के क्या फायदे हैं, इसे लेकर जनजागरण अभियान चला रही है। इसी तरह एनआरसी मुद्दे को भी भाजपा नेता गरमाए हुए हैं। आम आदमी पार्टी को घेरने के लिए भाजपा ने आयुष्मान भारत योजना को दिल्ली में लागू नहीं होने के क्या नुकसान है, इसे लेकर मतदाताओं के बीच जा रही है।

भाजपा के रणनीतिकारों की मानें तो, भाजपा केंद्र की नीतियों व विकास कार्य पर ही दिल्ली के चुनाव को केंद्रित करना चाह रही है। क्योंकि, दिल्ली सरकार की लगातार घोषणाओं को चुनौती देने के लिए केंद्र की मोदी सरकार की नीतियां ही प्रभावी हो सकती हैं। उधर, प्रधानमंत्री के मेगा शो के बहाने भाजपा दिल्ली के कार्यकताओं में उत्साह का संचार करने की नीति पर काम कर रही है।

रणनीतिकार यह भी मान रहे हैं कि दिल्ली सरकार यदि केंद्र को कटघरे में खड़ा करती है तो यह नीति उलटी पड़ेगी। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने भी अपनी बदली नीति के तहत सीधा किसी भी मुद्दे पर ना तो केंद्र सरकार और ना ही दिल्ली के उपराज्यपाल को कटघरे खड़ा कर रहे हैं, जबकि लोकसभा चुनाव तक सीधा केंद्र की योजनाओं पर टिप्पणी करते थे।

ऐसे में भाजपा की नीति यही है कि दिल्ली के मुद्दे छोड़कर केंद्र के विकास को लेकर ही मतदाताओं के बीच जाए। ऐसी स्थिति में जब विपक्षी पार्टी के नेता टिका-टिप्पणी करते हैं तो इसका सीधा फायदा भाजपा को होगा।

मच्छरों से पैदा होने वाली बीमारियों के विज्ञापन पर करोड़ों खर्च

तमाम दावों के बावजूद दिल्ली में डेंगू-मलेरिया का तांडव

नई दिल्ली। दिल्ली की केजरीवाल सरकार के तमाम दावों और प्रचार-प्रसार पर पानी की तरह पैसा बहाने के बावजूद डेंगू-मलेरिया तांडव कर रहे है। दिल्ली में डेंगू और मलेरिया की ताजा रिपोर्ट बता रही है कि मच्छरों से जुड़ी बीमारियों के मामले बढ़ गए हैं। इस वर्ष अब तक डेंगू के 92 मामले दिल्ली में सामने आ चुके हैं। इसके अलावा मलेरिया के 154 मामले अब तक सामने आ चुके हैं। जिससे आप सरकार के प्रयासों पर सवाल खड़े होने लगे हैं कि विज्ञापनों पर करोड़ों रुपए खर्च करने के बाद भी सरकार जनता को बीमारियों के प्रति जागरूक नहीं कर पाई।

दिल्ली नगर निगम द्वारा जारी की गई ताजा रिपोर्ट बताती है कि महज एक हफ्ते में डेंगू के 65 नए मामले सामने आ चुके हैं और इस वर्ष अब तक 282 डेंगू के मामले दिल्ली में सामने आए हैं। वहीं, मलेरिया और चिकनगुनिया भी तेजी से पांव पसार रहा है। दोनों बीमारियों ने अपने पिछले वर्ष के आंकड़ों को भी पीछे छोड़ दिया है। वहीं, दूसरी ओर चिकनगुनिया ने भी दिल्ली में अपना कहर बरपा दिया है. केवल 1 हफ्ते में चिकनगुनिया के 13 केस दिल्ली में सामने आ चुके हैं और इस वर्ष का आंकड़ा 87 तक पहुंच गया है जो पिछले वर्ष के आंकड़े 79 से आगे हैं।

तेजी से बढ़ रहे डेंगू मलेरिया-चिकनगुनिया

यह हाल तब है जब दिल्ली सरकार '10 हफ्ते 10:00 बजे 10 मिनट' डेंगू के खिलाफ महा अभियान चला रही है तो दूसरी ओर दिल्ली नगर निगम भी अपने स्तर से जगह-जगह डेंगू मलेरिया और चिकनगुनिया के खिलाफ अवेयरनेस कैंप चला रही है। बावजूद इसके दिल्ली में डेंगू मलेरिया चिकनगुनिया तेजी से बढ़े हैं। इसे लेकर राजनीति भी तेज हो गई है। दिल्ली नगर निगम में आये दिन बीजेपी और आम आदमी पार्टी डेंगू में कमी के मामलों को लेकर क्रेडिट वार के लिए एक दूसरे से भिड़ते रहते हैं। कुछ दिन पहले सदन में जमकर हंगामा हुआ था जिसके बाद मेयर ने आम आदमी पार्टी के 25 पार्षदों को सदन से निलंबित भी कर दिया था।

आपको बता दें कि दिल्ली में इस वक्त डेंगू और मलेरिया को लेकर दिल्ली सरकार और नगर निगम के बीच क्रेडिट वार भी जोर-शोर से चल रहा है। हालांकि 2015 में जब डेंगू के 15 हजार से भी अधिक मामले सामने आए थे, तब दिल्ली सरकार और नगर निगम दोनों में ही आरोप-प्रत्यारोप का दौर चल रहा था। दोनों ही इसके लिए एक-दूसरे को जिम्मेदार ठहरा रहे थे।

डेंगू और मलेरिया के खिलाफ अभियान चला रही केजरीवाल सरकार के अभियान का नगर निगम भी समर्थन कर रहा है। नगर निगम ने इस अभियान के समर्थन में अपने कर्मचारियों की छुट्टी भी बदल दी थी। दिल्ली सरकार की तरफ से अभियान के लिए रविवार का दिन निर्धारित किया है। ऐसे में एमसीडी ने अपने कर्मचारियों को रविवार को ड्यूटी पर रहने को कहा है। इसके बदले अब उन्हें बुधवार को छुट्टी मिलेगी। राजधानी दिल्ली में सरकार की तमाम कोशिशों के बावजूद डेंगू, मलेरिया और चिकनगुनिया के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। मलेरिया और चिकनगुनिया ने तो पिछले साल के आंकड़ों को भी पीछे छोड़ दिया है।

- प्रचार-प्रसार पर खूब पैसा बहा रही केजरीवाल सरकार
- लगातार बढ़ रही है अस्पतालों में मरीजों की संख्या
- आप सरकार व एमसीडी में छिड़ा है क्रेडिट वार

संपादकीय

मनोज तिवारी बाहरी हैं तो खुद क्या है केजरीवाल?

विनीतकांत पाराशर

63 लाख लोगों ने दूसरे राज्यों से आकर दिल्ली में शरण ली है। इसमें 23 .6 लाख लोगों ने परिवार सहित दिल्ली को अपना ठिकाना बना लिया है। करीब 19 .8 लाख लोग काम-धंधे या नौकरी की तलाश में दिल्ली आए हैं। 12 .2 लाख लोग अपनी शादी के सिलसिले में दिल्ली आकर रहने लगे हैं। करीब 1 लाख लोग सिर्फ पढ़ाई-लिखाई के लिए दिल्ली में रहते हैं, जबकि 6 .8 लाख लोग अन्य वजहों से दिल्ली में रह रहे हैं। दिल्ली की कुल बाहरी आबादी में से 40 फीसदी लोग दक्षिण-पश्चिमी दिल्ली, दक्षिणी दिल्ली और न्यू दिल्ली में रहते हैं।

दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल से पूछा गया था कि क्या दिल्ली में असम की तरह एनआरसी लागू होगी। अरविंद केजरीवाल बोले अगर ऐसा हुआ तो सबसे पहले मनोज तिवारी को दिल्ली छोड़नी पड़ेगी। अरविंद केजरीवाल बीजेपी के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष मनोज तिवारी पर तंज कस रहे थे। मनोज तिवारी कई बार दिल्ली में भी असम की तर्ज पर एनआरसी लागू करने की बात कह चुके हैं। मनोज तिवारी का कहना है कि दिल्ली में काफी बाहरी घुसपैठिएं हैं, जिन्हें बाहर निकालना जरूरी है। मनोज तिवारी पर अरविंद केजरीवाल का बयान शुद्ध राजनीतिक है। एनआरसी की लिस्ट से सिर्फ उन लोगों को बाहर रखा जाता है, जो गैरकानूनी तरीके से देश में रह रहे हैं। इसलिए मनोज तिवारी का पूर्वांचल का होने के कारण सिर्फ अरविंद केजरीवाल ने उनपर तंज कसा। लेकिन अगर दिल्ली में रहने वाले लोगों की बात करें तो 40 फीसदी लोग बाहरी लोग बाहरी राज्यों से आकर रह रहे है। अब सवाल ये उठता है कि केजरीवाल की नजर में वह सभी घुसपैठिये हैं।

दिल्ली में काफी बड़ी संख्या में दूसरे राज्यों से आए लोग रहते हैं। 2011 की जनसंख्या के मुताबिक दिल्ली देश का दूसरा ऐसा प्रदेश है, जहां सबसे ज्यादा संख्या में दूसरे राज्यों से लोग आते हैं। दिल्ली में काम करने और शादी की वजह से बाहर से आकर बसने वालों की संख्या सबसे ज्यादा है। हालांकि पहला स्थान अभी भी महाराष्ट्र का है। दूसरे राज्यों से पलायन करके महाराष्ट्र में सबसे ज्यादा लोग आते हैं। दिल्ली की कुल आबादी के करीब 40 फीसदी लोग बाहर से आए हैं। 63 लाख लोगों ने दूसरे राज्यों से आकर दिल्ली में शरण ली है। इसमें 23.6 लाख लोगों ने परिवार सहित दिल्ली को अपना ठिकाना बना लिया है। करीब 19.8 लाख लोग काम-धंधे या नौकरी की तलाश में दिल्ली आए हैं। 12.2 लाख लोग अपनी शादी के सिलसिले में दिल्ली आकर रहने लगे हैं। करीब 1 लाख लोग सिर्फ पढ़ाई-लिखाई के लिए दिल्ली में रहते हैं, जबकि 6.8 लाख लोग अन्य वजहों से दिल्ली में रह रहे हैं। दिल्ली की कुल बाहरी आबादी में से 40 फीसदी लोग दक्षिण-पश्चिमी दिल्ली, दक्षिणी दिल्ली और न्यू दिल्ली में रहते हैं।

दिल्ली में बाहरी लोगों पर अक्सर तंज कसा जाता है। कई मौकों पर बिहार और यूपी के लोगों को यहां की गदंगी और अपराध के लिए जिम्मेदार माना जाता है। लेकिन एक दिलचस्प तथ्य ये है कि पहले जिस रफ्तार से बाहरी लोग दिल्ली आ रहे थे, उसमें अब काफी कमी आई है। 2001 से लेकर 2011 के बीच बाहर से दिल्ली आने वाले लोगों की संख्या में भारी कमी देखी गई है। 1991 में करीब 17.7 लाख पुरुष दूसरे राज्यों से दिल्ली आए। 2001 में ये आंकड़ा बढ़कर 29.8 लाख हो गया। यानी इन 10 वर्षों में बाहरी राज्यों के पुरुषों के दिल्ली आकर रहने में 68.6 फीसदी की दर से बढ़ोत्तरी दर्ज हुई। वहीं 2011 में बाहर से दिल्ली आए पुरुषों की संख्या 33.1 लाख थी। यानी 2001 से 2011 के बीच बाहरियों के आने में सिर्फ 11 फीसदी की बढ़ोत्तरी दर्ज हुई। यही हाल महिलाओं की संख्या में भी हुआ है। 1991 से लेकर 2001 के बीच जहां महिलाएं 56.2 फीसदी की रफ्तार से दिल्ली आ रही थीं, वहीं 2001 से लेकर 2011 के बीच बाहर से आने वाली महिलाओं की संख्या में सिर्फ 28.9 फीसदी की बढ़ोत्तरी दर्ज हुई। एक दिलचस्प आंकड़ा ये है कि दिल्ली में रहने वाले लोगों में यूपी वालों की संख्या सबसे ज्यादा है। कुल बाहरी लोगों में सिर्फ यूपी की हिस्सेदारी आधे की है। यूपी के बाद सबसे ज्यादा बिहार, झारखंड और उत्तराखंड के लोग यहां आकर रहते हैं।

फिलहाल एनआरसी के मुद्दे पर दिल्ली में जंग छिड़ी हुई है। मनोज तिवारी पर तंज कसने के बाद अब केजरीवाल पर ये भी सवाल उठ रहे है कि एक सीएम को बाहरी राज्यों से आए लोगों और घुसपैठियों में अंतर नहीं पता तो वह आतंकियों और आम आदमी के बीच अंतर कैसे कर पायेगा। हालांकि अरविंद केजरीवाल भले ही मनोज तिवारी पर तंज कस रहे हों, लेकिन दिल्ली के लिए दोनों एकसमान ही हैं। मनोज तिवारी ने बिहार में जन्म लेकर कामकाज के सिलसिले में पहले मुंबई फिर दिल्ली को अपना ठिकाना बनाया। वहीं अरविंद केजरीवाल की पैदाइश भी हरियाणा की है और दिल्ली के सीएम बनने से पहले तक वो यूपी के गाजियाबाद में रह रहे थे। ऐसे में वह अपने लिए किन शब्दों का प्रयोग करेंगे बाहरी या घुसपैठिया।

डॉ. अजय शंकर पांडेय
जिलाधिकारी
गाजियाबाद

दिनेश चंद सिंह
नगर आयुक्त
नगर निगम गाजियाबाद

विशेष खबर की अपील

मेरा शहर साफ हो
इसमें सबका हाथ हो

प्लास्टिक हटाओ
धरती बचाओ

प्लास्टिक मुक्त भारत के
लिए जूट बैग का प्रयोग करें

विनीतकांत पाराशर
प्रधान संपादक, विशेष खबर

सियासी पिच के खिलाड़ियों ने रामलीला में भी जमाया रंग

लवकुश रामलीला में 15 से अधिक नेताओं ने किया अभिनय

पूर्वी दिल्ली की रामलीला के मंच पर महापौर समेत 8 पार्षद

विशेष खबर

नई दिल्ली। सियासी पिच पर चौके-छक्के लगाने वाले मंझे हुए खिलाड़ियों ने भी इस बार रामलीला के रंगमंच पर अभिनय का जौहर दिखाया। इनके अभिनय से फिल्मी पर्दे के अभिनेता तक चकित हैं। भारत में रामराज की स्थापना की कामना लेकर अभिनय में कूदे नेताओं ने रामलीला के मंच पर खूब वाहवाही लूटी। इससे दिल्ली की रामलीलाओं में श्रीराम के जयकारे गूंजे। इस बार दिल्ली के लाल किला की ऐतिहासिक लवकुश रामलीला में तीन केंद्रीय मंत्री अभिनय किया। इनमें डॉ. हर्षवर्धन, विजय सांपला और सत्यपाल सिंह शामिल हैं। वहीं, दिल्ली प्रदेश भाजपा अध्यक्ष मनोज तिवारी, दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष व भाजपा विधायक विजेंद्र गुप्ता, चांदनी चौक की विधायक अलका लांबा ने भी मंच पर अपनी प्रतिभा दिखा रही हैं।

लवकुश रामलीला में अभिनय करने वाले नेताओं की संख्या 15 से अधिक है। इनमें प्रदेश स्तर के कई नेताओं के साथ बिहार में राजद के विधायक संजय यादव भी मंच पर अपनी कला का जादू बिखेर रहे हैं। लवकुश रामलीला समिति के मंत्री अशोक अग्रवाल के अनुसार जनप्रतिनिधियों का रामलीला मंचन में रुचि लेना अच्छा संकेत है। इससे उनके अंदर अपनी सांस्कृतिक धरोहर को अगली पीढ़ी तक पहुंचाने को लेकर गंभीरता का पता चलता है।

पूर्वी दिल्ली की रामलीला में इस बार पूर्वी दिल्ली नगर निगम के कई पार्षद अभिनय कला का परिचय दे रहे हैं। पहले एक या दो पार्षद ही रामलीला में संक्षिप्त रोल करते थे, लेकिन इस बार आठ पार्षद अलग-अलग भूमिका निभा रहे हैं। नई सोच व नई उड़ान के नारों की बदौलत चुनाव जीतकर आए भाजपा के पार्षदों की इस बार की रामलीला में ज्यादा रुचि है। पूर्वी दिल्ली नगर निगम में नेता सदन संतोष पाल ने आइपी एक्टेंशन स्थित रामलीला में केवट का रोल कर लोहा मनवाया। वह युवावस्था में रामलीला में अलग-अलग भूमिकाएं निभाते थे, लेकिन काफी वर्षों से रामलीला में अभिनय नहीं कर रहे थे। कहते हैं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सेवा भावना ने नेताओं में भी सेवा करने का जोश भर दिया है। उन्होंने इसी वजह से भगवान श्रीराम के सेवक का रोल लिया। वह जनता की सेवा भी इसी रूप में करना चाहते हैं। संतोष पाल के अभिनय की लोगों ने भी काफी तारीफ की।

वहीं, निगम पार्षद शशि चांदना, बबीता खन्ना और अपर्णा गोयल ने आइपी एक्सटेंशन की रामलीला में सीता की सखियों का रोल किया। यहां की रामलीला में महापौर नीमा भगत ने जनकपुर की वरिष्ठ महिला की भूमिका निभाई। इस रामलीला में पहले पूर्व निगम पार्षद गीता शर्मा सीता की सखी का रोल करती थीं। पिछले साल तत्कालीन महापौर सत्या शर्मा ने भी मंच से संदेश दिया था।

पूर्वी दिल्ली की महत्वपूर्ण रामलीलाओं में से एक बालाजी रामलीला में भी पार्षदों ने अहम भूमिका निभाई। पहले इस रामलीला में पार्षद रोल नहीं करते थे। इस बार निगम महापौर व पार्षद अंजू कमलकांत ने जहां सुमित्रा का रोल किया, वहीं बबीता खन्ना कौशल्या बनीं। निगम पार्षद गुंजन गुप्ता ने सीता की मां सुनयना का रोल किया। बबीता खन्ना ने तो आइपी एक्सटेंशन के साथ-साथ बालाजी रामलीला में भी रोल किया। इसके अलावा विधायक ओमप्रकाश शर्मा एक दिन हनुमान जी का रोल करेंगे। कृष्णा नगर के निगम पार्षद संदीप कपूर ने गीता कॉलोनी रामलीला में राजा जनक का रोल किया। इस रामलीला में पहली बार किसी पार्षद ने अभिनय किया था। कपूर ने भी अपने अभिनय का लोहा मनवाया।

किस भूमिका में कौन नेता

डॉ. हर्षवर्धन: चांदनी चौक से सांसद व केंद्रीय मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने बताया कि वह राजनीति में आने से पहले भी रामलीला से जुड़े थे। राजनीतिक व्यस्तताओं की वजह से वह कुछ समय के लिए दूर हो गए थे। अब उन्हें रामलीला के मंच से फिर से अपने समर्थकों और पार्टी कार्यकताओं से नये अंदाज में मुखातिब होने का मौका मिला है। हर्षवर्धन ने राजा जनक के किरदार को मंच पर जीवंत कर दिया।

विजय सांपला: केन्द्रीय मंत्री विजय सांपला, माता पार्वती के पिता हिमालय की भूमिका में निभा रहे हैं। पिछले साल भी विजय सांपला ने रामलीला के मंच पर अभिनय किया था। उन्होंने निषादराज की भूमिका निभाई थी।

विजेंद्र गुप्ता: दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष व भाजपा के दिल्ली विधायक विजेंद्र गुप्ता पहली बार रामलीला के मंच पर ऋषि अत्रि की भूमिका निभा रहे हैं।

मनोज तिवारी: अभिनेता से नेता बने पूर्वी दिल्ली से भाजपा सांसद मनोज तिवारी पिछले साल की तरह इस साल भी अंगद की भूमिका निभा रहे हैं।

अलका लांबा: रामलीला के किरदारों की फेहरिस्त में चांदनी चौक विधानसभा क्षेत्र से आप विधायक अलका लांबा का नाम भी शामिल है। उन्हें रामलीला में देवी अहिल्या का किरदार निभाना है। हालांकि, राजनीतिक व्यस्तताओं के कारण उन्होंने किसी अन्य किरदार को मंच पर जीवंत करने का अनुरोध किया है।

बाल-गोपाल

इस बार से हम बच्चों के मनोरंजन एवं ज्ञान वृद्धि के लिए पहेली और शब्द/नंबर की मिलान प्रतियोगिता सुडकू शुरू करने जा रहे है। इस प्रतियोगिता में पांच से लेकर 12 साल के बच्चे हिस्सा ले सकते है। प्रतियोगिता में विशेष खबर परिवार के किसी भी सदस्य की प्रविष्टि मान्य नहीं होगी। प्रतियोगिता में सही प्रविष्टि के 10 विजेताओं को उचित पारितोषित दिया जाएगा। जिनका चयन ड्रा से होगा।

पहेलियां

1

वो कौन सी चीज है
जिसे खाने के लिए खरीदते हैं
लेकिन उसे खाते नहीं
लगाओ दिमाग... फेल हो गए क्या

2

खुली रात में पैदा होती
हरी घास पर सोती हूँ
मोती जैसी मूरत मेरी
बादल की मैं पोती हूँ
बताओ क्या ?

3

छोटे तन में गांठ लगी है,
करे जो दिन भर काम,
आपस में जो हिलमिल रहती,
नहीं करती आराम..

4

राग सुरीली रंग से काली,
सबके मन को भाती,
बैठ पेड़ की डाली पर जो,
मीठे गीत सुनाती...

सुडकू

5	4			2		8		6
	1	9			7			3
			3			2	1	
9			4		5		2	
		1				6		4
6		4		3	2		8	
	6					1	9	
4		2			9			5
	9			7		4		2

मां के नौ रूपों की पूजा कर भगवान श्रीराम ने किया 'रावण' का अंत

भारत के प्रमुख पर्वो में से एक पर्व है दशहरा जिसे विजयादशमी के नाम से भी मनाया जाता है। दशहरा केवल त्यौहार ही नही बल्कि इसे कई बातों का प्रतीक भी माना जाता है। इस त्यौहार के साथ कई धार्मिक मान्यताएँ व कहानियाँ भी जुड़ी हुई है लेकिन इस पर्व को पूरे देश-विदेशों में बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में मनाते है। इस पर्व को आश्विन माह की दशमी को मनाया जाता है।

दशहरें में रावण के दस सिर इन दस पापों के सूचक माने जाते हैझ काम, क्रोध, लोभ, मोह, हिंसा, आलस्य, झूठ, अहंकार, मद और चोरी। इन सभी पापों से हम किसी ना किसी रूप में मुक्ति चाहते है और इस आस में हर साल रावण का पुतला बड़े से बड़ा बना कर जलाते है कि हमारी सारी बुराइयाँ भी इस पुतले के साथ अग्नि में स्वाह हो जाये। यह पर्व हमें यह संदेश देता है कि अन्याय और अधर्म का विनाश तो हर हाल में सुनिश्चित है। फिर चाहे आप दुनियाभर की शक्तियों और प्राप्तियों से संपन्न ही क्यो न हो, अगर आपका आचरण सामाजिक गरिमा या किसी भी व्यक्ति विशेष के प्रति गलत होता है तो आपका विनाश भी

तय है। त्रेता में श्री राम को और द्वापर में श्री कृष्ण को अच्छाई का प्रतीक माना गया है क्योकि उन्होने अपनी इच्छा शक्ति के बल पर अधर्म पे धर्म की विजय प्राप्त की थी।

दशहरा पर भगवान राम ने अहंकारी रावण का वध कर अपनी पत्नी सीता को रावण के कैद से छुड़ाया था तथा देवी दुर्गा ने नौ रात्रि एवं दस दिन के युद्ध में महिषासुर पर विजय प्राप्त की थी। राम-रावण युद्ध नवरात्र में हुआ था और रावण की मृत्यु दशमी को हुई थी जिसके लिए विजयदशमी के दिन रावण का पुतला बनाकर जलाया जाता है। इस दिन भगवान रामचंद्र चौदह वर्ष का वनवास भोगकर तथा रावण का वध कर अयोध्या पहुंचे थे इसलिए भी इस पर्व को विजयदशमी कहा जाता है।

इस पर्व से जुडी एक अन्य कथा के अनुसार महिषासुर को उसकी उपासना से खुश होकर देवताओं ने उसे अजय होने का वरदान दे दिया था। उस वरदान को पाकर महिषासुर ने उसका दुरूपयोग करना शुरू कर दिया और नर्क को स्वर्ग के द्वार तक विस्तारित कर दिया। महिषासुर ने सूर्य, चन्द्र, इंद्रा, अग्नि, वायु, यम, वरुण और अन्य देवताओं के भी अधिकार छीन लिया और स्वर्गलोक का मालिक बन बैठा। महिषासुर के दुस्साहस से क्रोधित होकर देवताओं ने माँ दुर्गा की रचना की। महिषासुर का विनाश करने के लिए सभी देवताओं ने अपने अस्त्र-शस्त्र देवी दुर्गा को समर्पित कर दिए थे जिससे वह बलवान हो गयी थी। नौ दिनों तक उनकी महिषासुर से संग्राम चला और अंत में महिषासुर का वध कर दिया।

विजयदशमी से पहले नवरात्री मनाया जाता है। इस नवरात्री के दौरान माँ दुर्गा के नौ रूपों की पूजा की जाती है। ऐसी मान्यता है कि जब राम रावण के साथ युद्ध करने जा रहे थे तब नवरात्री का समय चल रहा था और श्रीराम ने इस शारदीय नवरात्री पूजा का प्रारंभ समुद्र तट पर किया था और उसके बाद दसवे दिन लंका विजय के लिए प्रस्थान किया जिसमे उन्हें विजय प्राप्ति हुयी। तब से असत्य, अधर्म पर सत्य, धर्म की जीत का पर्व दशहरा मनाया जाने लगा।

माँ के नौ रूपों के नाम और उनका अर्थ

शैलपुत्री- शैल का अर्थ है शिखर, पर्वत की चोटी

ब्रह्मचारिणी- ब्रह्मचारिणी का अर्थ है वह जो असीम, अनन्त में विध्यमान गतिमान है

चंद्रघंटा- चंद्रघंटा का अर्थ है चाँद की तरह चमकने वाली

कुष्मांडा- कुष्मांडा का अर्थ है की पूरा जगत उनके पैर में है तथा माँ का खुसी भरा रूप

स्कंदमाता- स्कंदमाता को बुद्धिमता ज्ञान की देवी कहा जाता है

कात्यायनी- इसका अर्थ है कात्यायन आश्रम में जन्मी तथा माँ दुर्गा की बेटी जैसी

कालरात्रि- इसका अर्थ है काल का नाश करने वाली

महागौरी- इसका अर्थ है माँ पार्वती का सुनदर रूप और पवित्रता का स्वरुप

सिद्धिदात्री- इसका अर्थ है सर्व सिद्धि देने वाली

अखंड सौभाग्य होने का वरदान देता है करवा चौथ व्रत

करवा चौथ के व्रत का हिन्दू धर्म में विशेष महत्व है। सुहागिन महिलाओं के लिए यह व्रत सभी व्रतों में सबसे खास है। इस दिन महिलाएं दिन भर भूखी-प्यासी रहकर अपने पति की लंबी उम्र की कामना करती हैं। यही नहीं कुंवारी लड़कियां भी मनवांछित वर के लिए निर्जला व्रत रखती हैं। इस दिन पूरे विधि-विधान से माता पार्वती और भगवान गणेश की पूजा-अर्चना करने के बाद करवा चौथ की कथा सुनी जाती है। फिर रात के समय चंद्रमा को अर्घ्य देने के बाद ही यह व्रत संपन्न होता है। मान्यता है कि करवा चौथ का व्रत रखने से अखंड सौभाग्य का वरदान मिलता है।

करवा चौथ की कथा

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार एक साहूकार के सात लड़के और एक लड़की थी। सेठानी समेत उसकी बहुओं और बेटी ने करवा चौथ का व्रत रखा था। रात्रि को साहूकार के लड़के भोजन करने लगे तो उन्होंने अपनी बहन से भोजन के लिए कहा। इस पर बहन ने जवाब दिया- ₹भाई! अभी चांद नहीं निकला है, उसके निकलने पर अर्घ्य देकर भोजन करूंगी। बहन की बात सुनकर भाइयों ने क्या काम किया कि नगर से बाहर जा कर अग्नि जला दी और छलनी ले जाकर उसमें से प्रकाश दिखाते हुए उन्होंने बहन से कहा- ₹बहन! चांद निकल आया है। अर्घ्य देकर भोजन कर लो।

यह सुनकर उसने अपने भाभियों से कहा, 'आओ तुम भी चन्द्रमा को अर्घ्य दे लो।' परन्तु वे इस कांड को जानती थीं, उन्होंने कहा- 'बाई जी! अभी चांद नहीं निकला है, तेरे भाई तेरे से धोखा करते हुए अग्नि का प्रकाश छलनी से दिखा रहे हैं।' भाभियों की बात सुनकर भी उसने कुछ ध्यान न दिया और भाइयों द्वारा दिखाए गए प्रकाश को ही अर्घ्य देकर भोजन कर लिया। इस प्रकार व्रत भंग करने से गणेश जी उस पर अप्रस्सन हो गए। इसके बाद उसका पति सख्त बीमार हो गया और जो कुछ घर में था उसकी बीमारी में लग गया।

जब उसने अपने किए हुए दोषों का पता लगा तो उसने पश्चाताप किया गणेश जी की प्रार्थना करते हुए विधि विधान से पुनः चतुर्थी का व्रत करना आरम्भ कर दिया। श्रद्धानुसार सबका आदर करते हुए सबसे आशीर्वाद ग्रहण करने में ही मन को लगा दिया। इस प्रकार उसकी श्रद्धा भक्ति सहित कर्म को देखकर भगवान गणेश उस पर प्रसन्न हो गए और उसके पति को जीवन दान दे कर उसे आरोग्य करने के पश्चात धन-संपत्ति से युक्त कर दिया। इस प्रकार जो कोई छल-कपट को त्याग कर श्रद्धा-भक्ति से चतुर्थी का व्रत करेंगे उन्हें सभी प्रकार का सुख मिलेगा।

कब है करवा चौथ?

करवा चौथ का त्यौहार दीपावली से नौ दिन पहले मनाया जाता है। हिन्दू पंचांग के अनुसार करवा चौथ का व्रत हर साल कार्तिक मास की चतुर्थी को आता है। वहीं, अंग्रेजी कैलेंडर के हिसाब से यह त्यौहार अक्टूबर के महीने में आता है। इस बार करवा चौथ 17 अक्टूबर 2019 को है।

एक्वा लाइन पर लगी प्लास्टिक डिस्पोजेबल मशीन

नोएडा। दिल्ली से सटे नोएडा की एक्वा लाइन मेट्रो पर अब यात्रियों को अब प्लास्टिक बोतलों व बैग को इधर-उधर ठिकाने लगाने की जरूरत नहीं होगी। नोएडा मेट्रो ने इसके लिए सैक्टर-51 स्टेशन पर कियोस्क लगाई गई है। जिसमें यात्री प्लास्टिक की बोतल व बैग डाल सकते है। इसकी एवज में नोएडा मेट्रो रेल निगम की ओर से यात्रियों को जूट बैग मिलेगा। इस योजना को अब नोएडा के अन्य स्टेशनों पर भी जल्द ही शुरू किया जाएगा।

आपको बता दें कि गांधी जयंती से इस योजना की शुरूआत नोएडा-सेक्टर-51 से की जा चुकी है। नोएडा मेट्रो रेल निगम से जुड़े अधिकारियों के मुताबिक जल्द ही एक्वा लाइन के सभी मेट्रो स्टेशनों पर प्लास्टिक डिस्पोजेबल मशीनें अथवा कियोस्क स्थापित किए जाएंगे। इन मशीनों के लगने के बाद मेट्रो यात्री इसमें बोतल डाल सकेंगे, जिसके बाद ये प्लास्टिक बैग गोलियों में तब्दील हो जाएंगे। अधिकारियों की मानें तो डिस्पोजेबल मशीन इन बोतल और प्लास्टिक मैटरियल को अन्य चीजों में तब्दील कर देगा, जो बाद में इस्तेमाल में लाई जा सकेंगी। वहीं, मेट्रो यात्री प्लास्टिक बैग्स और बोतलों के बदले फ्री में जूट बैग ले सकेंगे।

नोएडा मेट्रो रेल निगम के कार्यकारी निदेशक पीडी उपाध्याय के मुताबिक, हमारा प्रयास रहेगा कि ज्यादातर प्लास्टिक कचरा रिसाइकल हो सके। बता दें कि पिछले दिनों पीएम मोदी ने एकल उपयोग प्लास्टिक पर राष्ट्रीय स्तर पर बैन का ऐलान किया था। प्लास्टिक की बोतलें एक विशाल खतरे के रूप में तब्दील हो जाती हैं, खासकर जब वे लैंडफिल तक पहुंचती हैं।

उन्होंने बताया कि हमारे पास वितरण करने के पर्याप्त जूट बैग्स हैं। 10 प्लास्टिक बैग या 20 पॉलीथिन बैग्स के बदले एक जूट बैग मिलेगा। हमारे पास भुगतान क्षेत्र के भीतर काउंटर होंगे। आमतौर पर उपलब्ध कपड़े के थैलों के विपरीत, हमने सुनिश्चित किया है कि ये बैग सब्जी या किराने की खरीदारी के लिए कई बार उपयोग किए जाने के लिए पर्याप्त मजबूत हैं।

- नोएडा के अन्य मेट्रो स्टेशन पर भी जल्द होगी उपलब्ध
- 10 प्लास्टिक बैग के बदले मुफ्त ले सकते हैं जूट बैग
- सैक्टर-51 मेट्रो स्टेशन से हुई कियोस्क लगने की शुरूआत

स्मार्ट वॉच में दिखेंगे सफाई कर्मचारी

नोएडा। नोएडा अथॉरिटी के सफाई कर्मचारी अब स्मार्ट वॉच में नजर आएंगे। दो हजार कर्मचारियों को नोएडा अथॉरिटी ने स्मार्ट वॉच मुहैया कराने का फैसला किया है। एक स्मार्ट वॉच की कीमत करीब 20 हजार रुपए तक होगी। नोएडा अथॉरिटी अपने कर्मचारियों पर नजर बनाए रखने के लिए यह योजना बनाई है। अथॉरिटी कर्मचारियों की लोकेशन पता करने और उनके काम पर नजर रखने के लिए स्मार्ट वॉच देने वाली है। जानकारी के मुताबिक करीब 2 हजार कर्मचारियों को स्मार्ट वॉच मिलेगी।

आदर्श चरित्र के उपदेश देती है महर्षि वाल्मीकि की रामायण

एक विलक्षणता

गायत्री मंत्र में 24 अक्षर हैं। उनमें से प्रत्येक अक्षर से आरंभ करके वाल्मीकि जी ने एक सहस्त्र श्लोकों की रचना की थी। प्रथम अक्षर से एक श्लोक बन जाने पर द्वितीय अक्षर से प्रारंभ करके फिर से एक-एक सहस्त्र श्लोक बनाए। इस प्रकार 24 अक्षरों से आरंभ करके उन्होंने 24 सहस्त्र श्लोक बनाए। इससे महर्षि के चित में गायत्री मंत्र के प्रति विशेष सम्मान की भावना अभिव्यक्त होती है। एक दिन राम को सीता के गर्भवती होने का पता चला। उन्होंने प्रसन्न होकर कहा- प्रिय शीघ्र ही तुम बनने वाली हो, यदि इन दिनों तुम्हारी कोई विशेष मनोकामना हो, तो बताओ। मैं उसे पूरा करने को तैयार हूं। इस पर सीता ने गंगा तट पर ऋषि-मुनियों के दर्शन की कामना प्रकट की।

प्रदीप चौहान वाल्मीकि
वरिष्ठ भाजपा नेता

जब भगवान विष्णु ने महाराज दशरथ के महल में राम के रूप में अवतार लिया तभी वेद महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में रामायण के रूप में अवतरित हुए और अपने महान विचारों के ग्रंथ के रूप में रामायण को प्रस्तुत किया। रामायण की यह विशेषता है कि इसके चरित्र समाज के लिए आदर्श प्रस्तुत करते हैं। जीवन संघर्ष में अपने-अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंचते हैं, वे उपदेश नहीं देते अपितु उसे जीवन में साकार करते है। फलस्वरुप उनके उपदेशों का प्रभाव मार्मिक होता है।

वाल्मीकि रामायण एक महाकाव्य हैं जिसमें 24 सहस्त्र श्लोक हैं। करोड़ों हिंदूओं के लिए यह परम ग्रंथ है। इसकी कथा आदर्श चरित्र का उपदेश देती है। वेद कविता ही है जो ईश्वर की प्रेरणा से आदिकाल के ऋषि-मुनियों द्वारा लिखी गए हैं। तत्पश्चात महर्षि जी ने सर्वप्रथम रामायण का सृजन किया था। अतः उनके लिए आदि कवि और रामायण के लिए आदि काव्य का प्रयोग सर्वथा उपयुक्त होता है।

अब हम शुरू करते हैं कि किस तरह से रामायण का जन्म हुआ। प्रातः स्नान के लिए जाते समय वाल्मीकि जी ने क्रौंच पक्षियों के जोड़े को प्रणय करते देखा। उसी क्षण एक शिकारी के क्रुर बाण से नर क्रौंच की मृत्यु प्राप्त होते देख मादा क्रौंच चीत्कार कर उठी, इसी हृदयविदारक घटना को देखकर महर्षि वाल्मीकि का कवि हृदय रामायण के रूप में फूट पड़ा। उन्होंने शिकारी को श्राप देते हुए पहला वाक्य कहा कि अरे प्रणय क्रीड़ा में मग्न क्रौंच से अधिक, तुझे अनंत काल तक सद्गति प्राप्त न हो।

स्वयं वाल्मिकी करुण रस से ओत-प्रोत इस श्लोक के प्रणयन पर आश्चर्य चकित रह गए। उसी क्षण भगवान ब्रहमा ने प्रकट होकर कहा- महर्षि आपकी वाणी से तो प्रस्फुटित यह श्लोक मेरी इच्छा का ही फल है। यह श्लोक भविष्य में आपकी साहित्य साधना के लिए आदर्श का काम करेगा। आप नारद के मुख से श्री रामचंद्र के चरित्र को सुन चुके हैं। अब उन्हें छंदोबद्ध कीजिए। आपकी यह कृति अमर होगी। इस तरह भगवान से प्रेरणा पाकर वाल्मीकि जी ने इस महा काव्य की रचना की।

सीता जी वाल्मीकि आश्रम में

अपनी एक गुप्तचर से राम को जब यह पता चला कि अयोध्या के कुछ नागरिक इस बात पर टीका-टिप्पणी करते हैं कि रावण के यहां रहने पर भी उन्होंने सीता को स्वीकार कर लिया है। तब उन्होंने अपने भाइयों से परामर्श किया। लोक निंदा से बचने के लिए उन्होंने लक्ष्मण से सीता को वाल्मीकि के आश्रम में छोड़ आने के लिए कहा।

जब लक्ष्मण रथ में सीता को लेकर गंगा तट पर पहुंचे तब उन्हें गंभीर मुद्रा में देखकर सीता ने कारण जानना चाहा। लक्ष्मण को तब राम की इच्छा व्यक्त करनी ही पड़ी। सीता को बड़ा दुख हुआ किंतु उन्होंने कहा कि लक्ष्मण तुमने राजाज्ञा का पालन करके अपना कर्तव्य पूरा किया है। घर लौटकर मेरा प्रणाम तीनों सांसुओं से कहना। पतिदेव की लोक निंदा से रक्षा के लिए मैं यही रहूंगी। तुम अपने भाइयों को मेरी ओर से यही संदेश देना कि वे सदा प्रजा पालक का कर्तव्य निभाते रहे। जहां तक मेरा प्रश्न है मेरी ओर देखो, मैं गर्भवती हूं। लक्ष्मण ने उत्तर दिया, मैंने सदैव आपके चरणों को ही देखा है। अब आप मुझे अंयत्र देखते के लिए क्यों कह रही हैं? तब लक्ष्मण ने उनकी परिक्रमा की और उन्हें प्रणाम करके बिलखते हुए अयोध्या लौट गए।

नदी के तट पर सीता रोती बिलखती बैठी थी कि कुछ बालकों ने उन्हें देखा। उन्होंने दौड़कर महर्षि वाल्मीकि को इसकी सूचना दी। वाल्मीकि आकर बोले- अपने तपोवन से मैं जानता हूं कि तुम स्वर्गीय महाराज दशरथ की पुत्रवधू और महाराज राम चंद्र की धर्मपत्नी हो। मुझे तुम्हारे सतीत्व का ज्ञान है। मेरे आश्रम में तुम्हारा स्वागत है। सीता जी को सांत्वना मिली और उन्होंने वहां रहना स्वीकार कर लिया। वाल्मीकि ने उनका परिचय आश्रम की अन्य साध्वियों से कराया।

सुमंत लक्ष्मण को सांत्वना देते हैं

अयोध्या लौटते समय वयोवृद्ध सारथी सुमंत ने यह कहकर लक्ष्मण को सांत्वना दी, आप शोक न मानें। मुनि वशिष्ठ के आश्रम में दुवार्सा ऋषि ने महाराजा दशरथ को कुछ दिन पूर्व बताया था कि सीता दो बच्चों को जन्म देगी जिनमें से एक को रामचंद्र राज गद्दी देंगे। इस भविष्यवाणी को जिसे वृद्ध सुमंत ने इतनी दिनों तक गुप्त रखा था, सुनकर लक्ष्मण को बहुत हर्ष हुआ।

राम-राज

रामराज न्याय के लिए विख्यात है। सामाजिक नियमों का उल्लंघन करने वालों को कठोर दंड दिया जाता था। मूक पशुओं को सताने वालों को भी नहीं छोड़ जाता था।

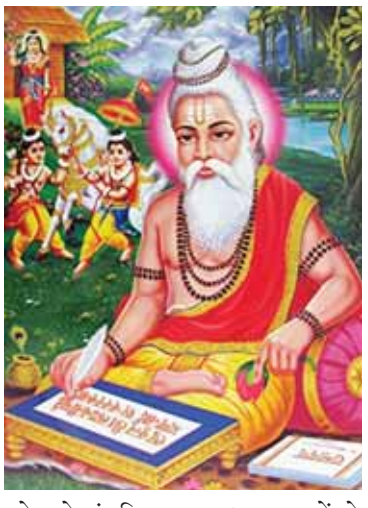

शत्रुघ्न का लवण से युद्ध

एक दिन जब यमुना तट वासी ऋषि मुनियों ने आकर राम से कहा- प्रभु, मधु का पुत्र लवण हमारे क्षेत्र में अपने दुष्कर्म के लिए कुख्यात है। वह हमें सदा ही तंग करता है। कृपया हमारी रक्षा करें। राम ने उन्हें सुरक्षा का आश्वासन दिया। यद्यपि भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न तीनों ने इसके लिए अपनी सेवाएं अर्पित की। किंतु राम ने शत्रुघ्न को चुनकर कहा- मैं तुम्हे उस क्षेत्र का शासक घोषित करता हूं। जाओ और लवण का संहार करो। उसके पास शिव प्रदत्त त्रिशूल है। जब तक वह अस्त्र उसके हाथ में रहेगा, वह अजेय है। अतः उसे उस समय संघर्ष के लिए ललकारना, जब उसके पास वह अस्त्र न हो। ऐसा उस समय होता है, जब वह जंगल से लौट रहा होता है।

मधु के क्षेत्र के लिए शत्रुघ्न ने अपनी सेना तो पहले ही भेज दी और वे स्वयं थोड़े समय पश्चात निकले। मार्ग में वे रात्रि विश्राम के लिए बाल्मीकि आश्रम में रूके। उसी रात सीता ने लव कुश नामक जुड़वा बच्चों को जन्म दिया। जब मध्यरात्रि में शत्रुघ्न को यह शुभ समाचार मिला, तब उन्होंने सीता जी से जाकर कहा, मां बधाई। दूसरे दिन सुबह वे बाल्मिकी का आशीर्वाद लेकर गंतव्य की ओर बढ़ें। मधुपुर पहुंचने पर शत्रुघ्न ने लवण से कठोर संघर्ष किया और अंत में उसे मारने में सफलता प्राप्त की। तब उन्होंने नगर को पुनः बसाया। 10 वर्ष में वह एक सुंदर नगर बन गया। तब वह अयोध्या को गए। मार्ग में उन्होंने सात दिन वाल्मीकि आश्रम में बिताए। महा उन्होंने राम कथा के गीत सुने। अयोध्या में एक सप्ताह रहकर वे पुनः मधुपुर लौट गए।

अश्वमेघ यज्ञ

एक दिन राम ने भरत और लक्ष्मण से राज सूर्य यज्ञ करने के बारे में परामर्श किया। भरत की सम्मति यज्ञ के पक्ष में नहीं थी, क्योंकि इसके लिए अनावश्यक युद्धों में बहुत हिंसा होती है। राम भी भरत की सम्मति से सहमत थे। अतः उन्होंने लक्ष्मण का अश्वमेघ यज्ञ संबंधित प्रस्ताव मान लिया।

लक्ष्मण की संरक्षण में एक विशेष अश्व छोड़ा गया। यज्ञ नैमिष वन में जाने वाला था। भरत ने सब अतिथियों के आवास और भोजन की आवश्यक व्यवस्था का काम अपने हाथों में लिया। सुग्रीव और विभीषण भी इसमें सम्मिलित होने आए। इस यज्ञ के बारे में वयोवृद्ध लोगों की यही राय थी थी हमने जीवन में इतना पूर्ण विधि विधान युक्त यज्ञ पहले कभी नहीं देखा। इस यज्ञ में वाल्मीकि भी सीता तथा लव कुश के साथ आए। वाल्मीकि के आदेश अनुसार लव कुश को राम कथा गाते हुए यज्ञ मंड़प की विभिन्न वीथिकाओं में घूमना था। उन्हें एक ही दिन में उस पुस्तक के 20 अध्याय गाकर सुनाने थे। अपने वंश के बारे में पूछे जाने पर उन्हें केवल यही बताना था कि वे वाल्मीकि के शिष्य हैं। उन्हें राजा के प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करने के आदेश थे।

लव कुश द्वारा रामायण पाठ

दूसरे दिन प्रातः ही लव कुश रामायण का पाठ प्रारंभ दिया। यह मनोरम काव्य है। अतिथियों में सामान्य प्रजा के साथ-साथ विख्यात विद्वान आए थे। रामायण पाठ को सुनकर सभी भाव विभोर हो गये। जिसने भी बालकों को देखा वह दोनों बालकों और राम के रुप में साम्य को देखकर आश्चर्यचकित रह गया।

बालकों ने मध्यान पर्यंत 20 अध्यायों का पाठ राम को सुना दिया। उनसे प्रसन्न होकर राम ने अपराहन सत्र में प्रत्येक को 18 हजार स्वर्ण मुद्राओं के पारितोषिक की घोषणा की। परंतु पालक ने उसे सविनय अस्वीकार कर दिया। बालाकों ने कहा कि हम इन स्वर्ण मुद्रा का क्या करेंगे, हम वन में रहते हैं और फलों पर जीवन का निर्वहन करते हैं।

राम ने पूछा- यह काव्य कितना विशाल है और इसके रचियता कौन है और वह कहां है?

उन्होंने उत्तर दिया- परम पूज्य वाल्मीकि इसके रचियता है और वे इस यज्ञ में आए हुए हैं। काव्य में सात सर्ग और 24 हजार श्लोक है। यदि आपकी इच्छा होगी, तो हम आपको पूरे काव्य का पाठ सुनाएंगे। राम ने सहमति दर्शाई और बालक ऋषि आवास पर चले गए। राम कई दिन तक यह काव्य सुनते रहे। इसी बीच उन्हें विदित हुआ कि लव कुश सीता के पुत्र है। राम ने अपने दूत भेजकर वाल्मिकी से प्रार्थना की कि यदि आपकी अनुमति से सीता अपनी पवित्रता उपस्थित लोगों के सम्मुख करने को सहमत हो तो उनका स्वागत है।

वाल्मीकि द्वारा सीता की प्रशंसा

वाल्मीकि ने प्रत्युत्तर भेज, हां कहा- एक पतिव्रता स्त्री के लिए उसका पति ही सर्वस्व है, अत : सीता सहमत है। तब राम ने यज्ञ में भाग लेने वाले सभी महानुभावों को एकत्रित होने के लिए आमंत्रित किया। बाल्मिकी आए और उनके पीछे-पीछे सीता जी भी आई। उपस्थित सज्जनों को संबोधित करते हुए वाल्मीकि ने घोषणा की कि दशरथ पुत्र राम, सीता पूर्ण रूप से पवित्र और पतिव्रता है। अपयश से डरकर आपने उसे मेरे आश्रम के पास छुड़वाया था। वह अपना सतीत्व और पति भक्ति सिद्ध करने को तत्पर है। आप इससे अनुरोध कर सकते हैं। सीता के जुड़वा बालक आपके ही पुत्र हैं। मैं प्रचेता का पुत्र और एक ऋषि हूं। मुझे स्मरण नहीं आता कि जीवन में मैंने कभी असत्य भाषण किया। यदि सीता सती न हो तो मेरे सुदीर्घ कठोर तप निष्फल हो। राम ने हाथ जोड़कर कहा- मैं जानता हूं सीता पूर्णरूपेण पवित्र है। देवताओं के सम्मुख वे लंका में परीक्षा दे चुकी हैं। अपयश के डर से ही मैंने सीता का त्याग किया था। मैं आपके लिए क्षमा प्रार्थी हूं। मुझे क्षमा करें। मैं यह भी जानता हूं कि लव कुश मेरे ही पुत्र है। सीता उपस्थित सज्जनों के सम्मुख अपनी पवित्रता सिद्ध कर दें। वे मेरे स्नेह की पात्र हैं। राम का निर्णय ज्ञात होते ही ब्रहमा सहित समस्त देवता वहां पधारे। समस्त वातावरण स्वर्गिक सुगंध से ओत प्रोत हो गया। इस चमत्कार पर सभी हर्षित और आश्चर्य चकित रह गए।

क्या वाकई ओडीएफ मुक्त हो गया है भारत ?

- शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में अभी गंभीरता से और काम की जरूरत
- सीवरेज और सेप्टिक टैंक से मल के निस्तारण पर अभी भ्रम
- यूपी में 63 फीसदी लोग सेप्टिक टैंक और पिट लैट्रिन पर निर्भर

प्रदीप वर्मा
वरिष्ठ संवाददाता

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हिंदुस्तान को खुले में शौच मुक्त ओडीएफ घोषित कर दिया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि डेढ़ सौ करोड़ देशवासियों ने भारत को खुले में शौच मुक्त बनाया है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण भारत ने खुद को खुले में शौच मुक्त किया है। उन्होंने कहा कि बापू के सपनों का भारत नया भारत बन रहा है। बापू के सपनों का भारत स्वच्छ होगा। पर्यावरण सुरक्षित होगा। स्वस्थ होगा और फिट होगा। निश्चित ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सोच और केंद्र सरकार के स्वच्छता अभियान के प्रयास बेहद सराहनीय है। लेकिन सवाल यह उठता है कि क्या देश के 10 करोड़ से अधिक शौचालय चालू स्थिति में है ? क्या उनमें साफ सफाई की व्यवस्था पर्याप्त है ? क्या उन्हें रेगुलर साफ किया जाता है ? अगर इन सवालों पर नजर दौड़ाई जाए तो सरकारी मशीनरी की कार्य क्षमता और कार्यशैली पर सवाल खड़े होने स्वाभाविक हैं।स्वच्छता की रैंकिंग में उत्तर प्रदेश के सबसे सांप शहरों में शामिल गाजियाबाद में कुल 197 यूरिनल और 105 सार्वजनिक शौचालय हैं। लेकिन उनमें से ज्यादातर की स्थिति बेहद खराब है। यूरिनल के पाइप गायब है और सफाई ना होने की वजह से उनमें शौच करना भी बेहद मुश्किल है। शौचालय जहां भी बने हैं वहां बदबू की वजह से आसपास की सड़कों से निकलना भी लोगों का दुश्वार हो गया है। जिसकी वजह से लोगों को शौचालय के आजू-बाजू में ही नाले नालियों पर निफराम होना पड़ता है। ऐसे में शहरी नगरीय निकायों में सरकारी मशीनरी को स्वच्छता को लेकर अभी गंभीरता से प्रयास करने की जरूरत है और संसाधनों को विकसित करने की जरूरत है।

ग्रामीण इलाकों की बात करें तो सेंटर फॉर साइंस एंड एनवॉयरमेंट (सीएसई) के एक अध्ययन के मुताबिक देश में प्रति व्यक्ति प्रतिदिन औसतन 250 ग्राम मलत्याग करता है। इस हिसाब से देश की करीब 1 अरब 33 करोड़ 92 लाख आबादी प्रतिदिन औसतन 3.69 लाख टन मलत्याग कर रही है। वहीं, यह माना जाता है कि हर टैंक या गड्ढे की सफाई तीन वर्ष पर होनी चाहिए। 2015 से 2019 स्वच्छ भारत मिशन के तहत बनाए गए सभी सेप्टिक टैंक, ट्विन पिट, बायोडाइजेस्टर, बायो टायलेट को अब खाली करने का वक्त आ गया होगा। भविष्य में इनका इस्तेमाल इनकी सफाई पर ही निर्भर होगा। सफाई हुई तो मल का कीचड़ (फीकल स्लज) कहां जाएगा ? केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) की इन्वेंटोराइजेशन ऑफ सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट्स रिपोर्ट देश में सीवेज और उसके उपचार को आंकड़ों में समझाने की कोशिश करती है। रिपोर्ट के मुताबिक 2008-09 में 38,254 मिलियन लीटर प्रति दिन (एमएलडी) सीवेज निकासी होती थी जबकि सीवेज शोधन की क्षमता 12,000 एमएलडी थी। वहीं, रिपोर्ट के अनुसार 2015 में पूरे देश में अनुमानित 62,000 एमएलडी सीवेज की निकासी होती है। सीवेज शोधन के लिए 920 एसटीपी हैं जिसकी क्षमता 23,277 एमएलडी है, जिसमें 615 एसटीपी के जरिए 18,883 एमएलडी सीवेज का ही उपचार होता है। अनुमानित सीवेज निकासी का बहुत ही थोड़ा सा हिस्सा शोधित किया जाता है। शेष जल और जमीन को प्रदूषित करता है।

सीवेज शोधन प्लांट (एसटीपी) भी सीधे सीवेज नेटवर्क से नहीं जोड़े जा रहे। सीवेज नेटवर्क के बजाए सीवेज ढोने वाली नालियां जो नदियों और जलाशयों से जाकर मिल जाती हैं उनके पानी को रोक कर एक इंटरसेप्टर बनाया जाता है और एसटीपी में डायवर्ट कर दिया जाता है। अभी तक सभी नाले भी इंटरसेप्टर से नहीं जुड़ पाए हैं। सीवेज का मतलब बिना शोधित मल-मूत्र का पानी है जो सीवेज नेटवर्क में जाता है। वहीं, बाथरुम और किचन से निकला हुआ गंदा पानी भी सीवेज का ही हिस्सा है। जबकि मल कीचड़ (फीकल स्लज) सेप्टिक टैंक में मौजूद होता है। सीपीसीबी की सीवेज संबंधी रिपोर्ट एक भ्रम पैदा करती है। रिपोर्ट की शुरूआत में गंदे जल के अध्ययन और आंकड़े की बात कही गई है। शहर का गंदा जल एक बड़ी छतरी है जिसमें सीवेज एक हिस्सा भर है। रिपोर्ट गंदे जल को ही सीवेज बताती है। जबकि सीवेज की परिभाषा है कि जो भी निकासी सीवेज नेटवर्क में है उसे ही सीवेज में गिना जाएगा। पूरे देश में महज 30 फीसदी सीवेज नेटवर्क है। ऐसे में रिपोर्ट यह स्पष्ट नहीं करती कि 62,000 एमएलडी सीवेज का आकलन 30 फीसदी सीवेज नेटवर्क के आकलन पर केंद्रित है या फिर सभी नालों में बह रहे विभिन्न तरह के गंदे जल पर।ऐसे में सरकार जिसे सीवेज कहना चाह रही है उससे यह साफ अंदाजा नहीं लगता कि वह कितने मल कीचड़ और उसके उपचार की बात कह रही है। सीएसई में सीवेज नेटवर्क और उससे जुड़ी जानकारियों के अध्ययनकर्ता और विशेषज्ञ भितूश लूथरा बताते हैं कि यह बहुत ही भ्रामक है। अगर देश में प्रति व्यक्ति औसत 80 लीटर प्रतिदिन पानी इस्तेमाल करता है तो उसमें से 64 लीटर पानी गंदा पानी बन कर बाहर आता है। यह सिर्फ घरेलू इस्तेमाल की बात है। इसलिए गंदे पानी को ही सीवेज और फीकल स्लज कहना बड़ी टेढ़ी बात है। यह परिभाषा के अनुकूल भी नहीं है।2015 की इस रिपोर्ट के बाद कोई अध्ययन और आंकड़ा सरकार की तरफ से नहीं पेश किया गया है जिससे यह अंदाजा लगे कि देश में कितना सीवेज निकलता है और कितने का उपचार किया जा रहा है। जो भी जानकारी अभी तक है वह 2015 की है जबकि उसके बाद से स्वच्छ भारत मिशन योजना के तले 10 करोड़ शौचालय बनाए गए हैं। अब इन टैंकों से मल का कीचर कैसे निकलेगा यह सोचा ही नहीं गया।

सीएसई के भितूश लूथरा बताते हैं कि जब अंधाधुंध शौचालय बनाए जा रहे थे तो यह ध्यान ही नहीं रखा गया कि सीवेज नेटवर्क बनाया जाए। स्वच्छ भारत मिशन के तहत चार तरह के शौचालय बनाए गए। शहरों में दो या तीन चैंबर वाले सेप्टिक टैंक और गांवों में ट्विन टैंक। वहीं, इसके अलावा रेलवे की तरह बायोडाइजेस्टर और बायो टायलेट भी बनाए गए।सेप्टिक टैंक को तो खाली करना ही पड़ेगा लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में मल से खाद बनाने वाले ट्विन टैंक की डिजाईन यदि खराब है तो वह किसी काम का नहीं रह जाएगा। उसे भी खाली ही करना पड़ेगा। उत्तर प्रदेश और झारखंड में करीब 60 से 70 फीसदी टैंक की डिजाईन में कुछ न कुछ खामी है। खासतौर से ट्विन टैंक में भी। इसलिए ओडीएफ पर टिके रहने के लिए बड़े पैमाने पर इनको खाली करते रहना पड़ेगा। वरना ऐसे स्थान जहाँ भू- जल स्तर अधिक है वहाँ प्रदूषण जारी रहेगा।

देश की सबसे बड़ी आबादी वाले राज्य उत्तर प्रदेश में मल प्रबंधन व्यवस्था को समझने की कोशिश करते हैं ताकि आपको अंदाजा लगे कि यह मल प्रबंधन कितनी बड़ी चुनौती साबित होने वाली है। सीएसई की ओर से 23 दिसंबर 2018 को यूपी के 66 प्रमुख शहरों में फीकल स्लज यानी मल कीचड़ के प्रबंधन वाली रिपोर्ट तैयार की गई थी।इस रिपोर्ट के मुताबिक उत्तर प्रदेश में 63 फीसदी लोग सेप्टिक टैंक और पिट लैट्रिन पर निर्भर हैं। इनमें से 11 फीसदी मल कीचड़ का उपचार हो जाता है। 52 फीसदी आबादी के मल का कोई उपचार नहीं होता। इनके टैंक को खाली कर किसी जगह निस्तारण किए जाने की जरूरत है। अब सवाल है कि यह निस्तारण कैसे होगा ?इसके अलावा उत्तर प्रदेश में 29 फीसदी आबादी ऐसी है जो सीवेज नेटवर्क से जुड़ी है। इनमें महज 16 फीसदी ही सीवेज का उपचार होता है। मल कीचड़ का उपचार नहीं हो पाता है देश में 20 फीकल स्लज प्लांट पायलट योजना के तहत बनाए गए हैं। उत्तर प्रदेश एक चेहरा है जिसे देखकर देशभर की शौचालय व्यवस्था में मल प्रबंधन का अंदाजा लगाया जा सकता है। मल कीचड़ सेप्टिक टैंक से निकलकर नदियों में जाएगा या फिर उसी टैंक में ही पड़ा रह जाएगा। और ओडीएफ भारत फिर से मलत्याग के लिए मैदान, खेत, नालियों की तरफ भागने लगेगा। यह मंजर बहुत जल्द सामने आने वाला है।

सीवेज शोधन प्लांट (एसटीपी) भी सीधे सीवेज नेटवर्क से नहीं जोड़े जा रहे। सीवेज नेटवर्क के बजाए सीवेज ढोने वाली नालियां जो नदियों और जलाशयों से जाकर मिल जाती हैं उनके पानी को रोक कर एक इंटरसेप्टर बनाया जाता है और एसटीपी में डायवर्ट कर दिया जाता है। अभी तक सभी नाले भी इंटरसेप्टर से नहीं जुड़ पाए हैं। सीवेज का मतलब बिना शोधित मल-मूत्र का पानी है जो सीवेज नेटवर्क में जाता है। वहीं, बाथरुम और किचन से निकला हुआ गंदा पानी भी सीवेज का ही हिस्सा है।

'बिग बॉस' को लेकर ब्राहमणों में उबाल

अखिल भारतवर्षीय ब्राह्मण महासभा ने फूंका अभिनेता सलमान का पुतला

ब्राहमणों को आरोप- शो से लव जिहाद को मिल रहा बढ़ावा

संवाददाता

गाजियाबाद। अखिल भारतवर्षीय ब्राह्मण महासभा महानगर गाजियाबाद द्वारा बिग बॉस 2019 में हो रही अश्लीलता एवं हिन्दू संस्कृति के अपमान पर शो के होस्ट अभिनेता सलमान खान का पुतला फूंका गया। पुराना बस स्टैण्ड चौराहे पर ब्राहमण महासभा से जुड़े लोगों ने सलमान खान के पुतले पर न केवल जूते-चप्पल बरसाये। बल्कि उनके पुतले को भी आग के हवाले कर दिया।

बस अड्डे पर प्रदर्शन के दौरान महानगर महामंत्री तरुण भारद्वाज ने कहा कि आज टी.वी. सीरियल के माध्यम से घरों तक अश्लीलता फैलाई जा रही है। बच्चों, बहनों पर इसका गलत प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने अल्टीमेटम दिया कि बिग बॉस शो को बंद किया जाये अन्यथा ब्राह्मण समाज पूरे देश मे अपनी-अलग अलग इकाइयों के माध्यम से प्रदर्शन करेगा। महानगर सचिव आदित्य शर्मा ने कहा कि बिग बॉस लव जिहाद को बढ़ावा दे रहा है। टी.वी. पर हिन्दू संस्कृति को बदनाम किया जा रहा है। मैं सलमान खान को चेतावनी देता हूं कि जल्द-जल्द इस शो को बंद करें। मीडिया प्रभारी मणिकांत शर्मा ने कहा कि हिन्दू का अपमान सहन नहीं किया जाएगा। इस शो को बंद किया जाये अन्यथा अखिल भारतवर्षीय ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंडित बी.डी. शर्मा के नेतृत्व में पूरे देश में आंदोलन करेगी। महानगर उपाध्यक्ष हिमांशु पाराशर ने कहा कि इस सीरियल को बंद किया जाए, इसने हिन्दू समाज को बदनाम करने का काम किया है तथा सलमान खान पर एफआईआर दर्ज की जाये। इस मौके पर विकास हिन्दू सचिव, विनय वत्स अध्यक्ष मोदीनगर देहात, ऋषभ तिवारी, अंकित शर्मा, अमन शर्मा, विकास भारद्वाज, मोनू पंडित, रतन प्रकाश, मनमोहन शर्मा, महेश शर्मा, देवू शर्मा, विकास शर्मा, राहुल शर्मा, योगेश शर्मा आदि सैकड़ो ब्राह्मण कार्यकर्ता मौजूद रहे।

विधानसभा में गूंजा खोड़ा के पेयजल संकट का मुद्दा

गाजियाबाद। साहिबाबाद विधानसभा क्षेत्र के लोगों की पेयजल समस्या उत्तर प्रदेश के विधानसभा में गूंजी। साहिबाबाद के विधायक सुनील शर्मा ने विधानसभा में पेयजल संकट का मुद्दा उठाया और सरकार से खोड़ा और साहिबाबाद के लोगों को गंगा जल आपूर्ति के लिए ठोस कदम उठाने की की मांग की।

साहिबाबाद विधायक सुनील शर्मा ने विधानसभा में उठाया मामला

लखनऊ में विधानसभा सत्र के दौरान साहिबाबाद से भाजपा विधायक सुनील शर्मा ने क्षेत्र के लोगों की समस्याओं को पुरजोर तरीके से उठाया। उन्होंने विधानसभा में पड़ने वाली खोड़ा नगर पालिका में पेयजल संकट का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि एशिया की सबसे बड़ी नगर पालिका में सरकारी मशीनरी द्वारा पेयजल आपूर्ति की कोई व्यवस्था नहीं है। जिसकी वजह से यहां रहने वाले लोगों को अपने संसाधनों से पानी की व्यवस्था करनी पड़ती है, जो बेहद गंभीर विषय है। उन्होंने खोड़ा नगर पालिका में पेयजल आपूर्ति के लिए एक ठोस प्लान बनाने और खोड़ा के लोगों को पीने के पानी की आपूर्ति के लिए सरकार से मांग की।

विधायक सुनील शर्मा यहीं नहीं रुके बल्कि उन्होंने वसुंधरा-वैशाली क्षेत्र में होने वाली गंगा जल आपूर्ति का मुद्दा भी जोर शोर से उठाया। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में गंगा जल की आपूर्ति होती है, लेकिन इसके बाद भी स्थानीय लोगों के सामने पानी का संकट बना रहता है। इस क्षेत्र में भी पानी आपूर्ति के लिए विशेष प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। इन समस्याओं को उठाने के दौरान स्पीकर द्वारा कई बार विधायक सुनील शर्मा को समय पूरा होने की वजह से रोका गया। लेकिन वह विधानसभा क्षेत्र की समस्याओं को उठाने के लिए चुप नहीं हुए और लगातार अपनी समस्याओं को सदन के सामने रखते रहे।

वोहि एक नाम हमेशा रहेगा जय वाल्मीकि हर हर वाल्मीकि

ॐ वोहि एक ब्रह्म

महर्षि वाल्मीकि प्रकटोत्सव समारोह

ॐ वोहि एक ब्रह्म

13 अक्टूबर 2019, रविवार

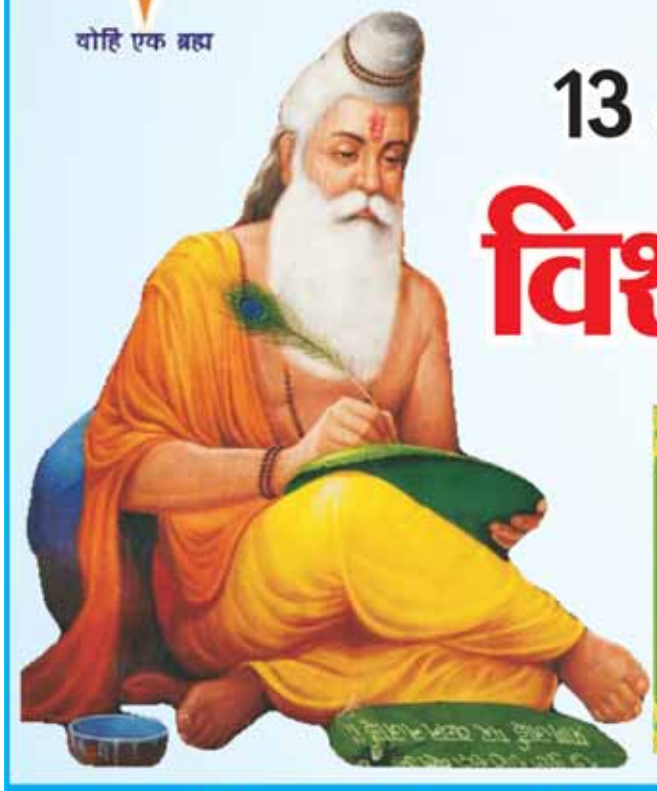

विशाल शोभायात्रा

सोमवार
14 अक्टूबर 2019
विशाल भण्डारा
दोपहर 11.00 बजे

मंगलवार
15 अक्टूबर 2019
पुरूस्कार वितरण
सायं 5.00 बजे

अनिल कल्याणी
महानगर अध्यक्ष

निवेदकः- श्री महर्षि वाल्मीकि प्रकटोत्सव समिति, महानगर, गाजियाबाद।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक विनीतकांत पाराशर द्वारा भारद्वाज प्रिंटर्स, शॉप नं. 1, प्रिया सिनेमा मार्केट, मुरादनगर, गाजियाबाद से छपवाकर सैकेंड ए-288 नेहरूनगर, गाजियाबाद उत्तर प्रदेश से प्रकाशित किया। संपादक विनीतकांत पाराशर, RNI: UPHIN/2017/74151 प्रशासनिक कार्यालय : ए-288 नेहरूनगर द्वितीय, गाजियाबाद।